कमल कीचड़ में खिलता है

साफ़ पानी सभी तालाबों में मिलता है
पर कमल तो कीचड़ में ही खिलता है

हम कपड़ा खरीदते हैं अपनी मर्ज़ी का
पर ज़ुबां पर नाम नहीं होता दर्जी का
असल में तो कपड़े दर्जी ही सिलता है
और वैसे भी कमल कीचड़ में ही खिलता है।

जब वयकति किसी मुश्किल से घिरता है ,
और उसका हल इधरउधर ढूढता फिरता है-,
वह वयकति सब रुकावटों का सामना कर उभरता निकलता है,
मुश्किलें आसान न थीं,न हैं और न होगी साफ,
पानी की तरह गलतियाँ न होगी माफ क्योकि,
साफ़ पानी सभी तालाबों में मिलता है ,
कमल तो फिर भी कीचड़ में खिलता है ।

तनवीर सिंह
S1-A

दहेज

सदियों से यह परंपरा चली आ रही है,
यही है जिसके कारण बेटियां बोझ मानी जा रही है,
कविता, सेर, निबंध, खिलाफ इसके बहुत लिखे जाते है,
पर यह छोटी सोच के बादल हट नहीं पाते है।

दहेज न मिलने पर वधू को बहुत सताते है,
यह असामाजिक सोच रखने वाले स्त्री के कत्ल तक उतर आते है।
दहेज न लेने वालों को खुद पर फ़क्र होता है,
अरे!दहेज न लेना एहसान नहीं फर्ज़ होता है।

आज से दहेज के खिलाफ आवाज़ उठाएंगे,
वधुओ को बिना दहेज के ससुराल में प्रतिष्ठित स्थान दिलाएंगे।

ध्रुव पांडेय
कक्षा -९
ज्ञान भारती स्कूल,साकेत,
नई दिल्ली-११००१७

विज्ञान

शब्द सरल है,व्याख्या अनेक है,
पूरे संसार में जो भी होता उसके पीछे यह एक है।
पूरी तरह समझने में इसे कोई सफल न हो पाया है,
क्योंकि इसके असीमित विस्तार ने सबको उलझाया है।

अगर इसके अंश मिट जाए तो कोई न बच पाएगा,
पृथ्वी,आकाश,जल और आग सबकुछ खत्म हो जाएगा।
इसके सार के ज्ञाता के समक्ष पूरा संसार शीश झूकाएगा,
तभी से वो प्राणी विश्व का गुरु कहलाएगा।

ध्रुव पांडेय
कक्षा -९